ISSN 2349-1043

युगान्तर टुडे

वर्ष : 2 • अंक : 11 • मूल्य : 20 रुपये

एडिटर इन चीफ

डॉ. आर. के. चौहान

एडिटर

राजेश कुमार

सब एडिटर

विभाष कुमार, अमन कुमार चौधरी

एग्जिक्यूटिव डायरेक्टर

नरेन्द्र कुमार पाण्डेय

मैनेजिंग डायरेक्टर

ऋषिकेश

मैनेजिंग एडिटर

ठाकुर प्रसाद चौबे

वरिष्ठ संवाददाता

विपुल कुमार

राज्य ब्यूरो

मुरारी पाण्डेय (दिल्ली),
श्याम सुन्दर पांडेय (पटना),
विवेक एस. तोमर (भोपाल),
रेशमा अली (ग्वालियर),
अजीत पाठक (पूर्वांचल),
पवन कुमार सिंह (अवध)

विधि विशेषज्ञ

अरुण कुमार शुक्ला

मैनेजर विपणन एवं विज्ञापन

धर्मपाल

संपर्क : 9555222747, 9540468787
8287473549

Email : yugantartoday@gmail.com

रजिस्टर्ड कार्यालय

47, ए-3 ब्लॉक, गली नं. 5,
धर्मपुरा एक्सटेंशन, दिल्ली-110043

संपादकीय कार्यालय

सी-289, गांधी विहार, दिल्ली-110009

प्रकाशित रचना के विचार से संपादक का सहमत होना जरूरी नहीं है। युगान्तर टुडे से संबंधित सभी विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

रूपेश कुमार चौहान द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित।

सामग्री की नकल येन-केन प्रकारेण प्रतिबंधित। युगान्तर टुडे किसी भी न मांगी गई सामग्री को वापस करने की स्वीकारोक्ति नहीं करती।

सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय हैं।

सूफीवाद-मानवता का सच्चा सुकून 5

फिल्मों में छात्र-राजनीति 23
अर्चना उपाध्याय

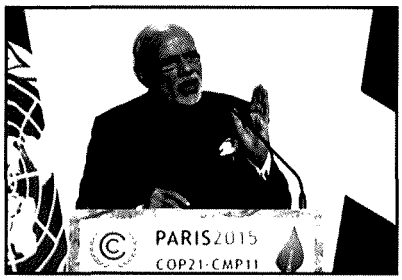

वैश्विक जलवायु नीतियों की दिशा व दशा का मूल्यांकन 41

मनोज कुमार नवाजे जाएंगे फाल्के अवार्ड से 51

विषय सूची

विश्व संस्कृति का अद्भुत संगम 9
ऋषिकेश
उच्च शिक्षा का दंश 15
डॉ. आर.के. चौहान
राष्ट्रविरोधी नारों के मायने 17
राकेश रंजन
मुजफ्फरनगर : जांच आयोग की लीपापोती 19
युगान्तर टुडे ब्यूरो
संस्कृत उत्थान के लिए प्रधानमंत्री से गुहार 25
संवाददाता
कामुक पुरुषों के लक्षण एवं पहचान 26
विवेक एस. तोमर
रंगों का त्योहार : होली 28
आशुतोष कुमार
जून में महिला लड़ाकू पायलटों का पहला जत्था 32
संवाददाता
स्वाधीनता संग्राम के अजेय सेनानी चंद्रशेखर आजाद 33
शुभेश कुमार मिश्र
पांच राज्यों में चुनावी बिगुल 37
युगान्तर टुडे ब्यूरो
मिलनसार और खुशनुमा व्यक्तित्व के मालिक थे संगमा 40
विपुल कुमार
राष्ट्र का गद्दार कौन? 47
प्रो. दलवीर सिंह चौहान
शारापोवा डोप टेस्ट में फेल, अस्थायी निलंबन 49
युगान्तर टुडे ब्यूरो
ग्रामवासियों में जन धन योजना के प्रति जागरूकता अभियान 52
संवाददाता

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रूपेश कुमार चौहान द्वारा 47, ए-3 ब्लॉक, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्स., दिल्ली-43 से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली में मुद्रित। सम्पादक-राजेश कुमार

फिल्मों में छात्र-राजनीति

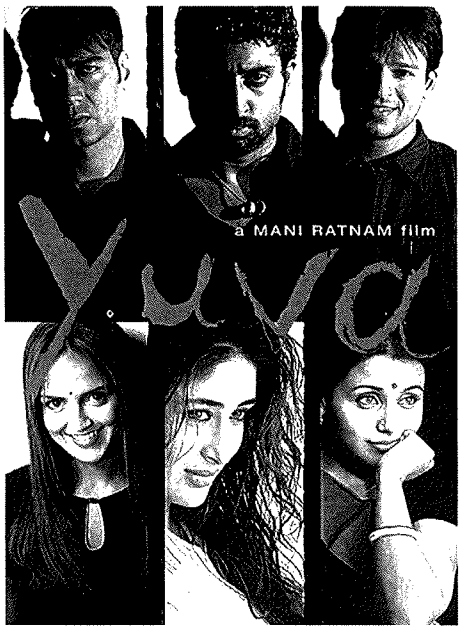

आज के युग का युवा अधिक उन्मुक्त और भौतिकतावादी हो गया है। छात्र अपने भविष्य के प्रति सजग होने के बावजूद कहीं कुछ लापरवाह भी दिखाई दे रहा है। युवाओं की महत्त्वाकांक्षा उन्हें राजनीति की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। कभी वह अपनी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए तो कभी समाज को स्वच्छ व स्वस्थ करने का सपना लेकर देश की सक्रिय राजनीति की ओर उन्मुख होते हैं।

• अर्चना उपाध्याय

युवा-वर्ग हमेशा ही फिल्मों के केन्द्र में रहा है। चूँकि युवा सामाजिक-व्यवस्था का केन्द्र-बिन्दु होता है इसलिए फिल्मों का ताना-बाना युवा-वर्ग को केन्द्र में रखकर बुना जाना स्वाभाविक है। वह युवा-शक्ति ही है जो कि अपने जोशीले तथा ऊर्जावान विचारों के दम पर समाज की सड़ी-गली तथा निरर्थक परम्पराओं को तोड़कर नए मूल्यों की स्थापना करता है। इस प्रक्रिया में कई बार उसके विचार पारम्परिक मूल्यों से टकराते भी हैं। स्थापित सामाजिक नियमों तथा युवा-विचारों के मध्य होने वाला टकराव एक नवीन दिशा तय करता है। यह नई दिशा हर बार सुखद ही हो यह आवश्यक नहीं है। कई बार तो इसका अन्त दु:ख, निराशा और कुंठा के गहरे अन्धकार के रूप में होता है।

'गुलज़ार' की फिल्म 'मेरे अपने' में युवा-राजनीति को पथभ्रष्ट व गुमराह होने से बचने का संकेत किया गया है। इस फिल्म में छात्र-राजनीति के द्वारा युवाओं को यह बताने का प्रयास किया गया है कि वे अपनी शक्ति व ऊर्जा को नेताओं के बहकाने-फुसलाने में आकर नष्ट न करें, बल्कि स्वयं अपना रास्ता सुनिश्चित करें।

'मणिरत्नम' द्वारा निर्देशित फिल्म 'युवा' उस्मानिया विश्वविद्यालय में घटित सत्य घटना पर आधारित है। फिल्म में अजय देवगन, अभिषेक बच्चन तथा विवेक ओबेरॉय युवा-सोच का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये युवक फिल्म में राजनीतिक वातावरण को सुधारने का प्रयास करते हैं। फिल्म के माध्यम से छात्रों को सक्रिय राजनीति में प्रवेश करने के लिए प्रेरित किया गया है।

'हिमांशु शर्मा' द्वारा लिखी गई पटकथा पर आधारित 'रांझना' इस कड़ी में एक अन्य सशक्त फिल्म है। फिल्म जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.) की राजनीतिक गतिविधियों को दर्शाती है। इसमें सोनम कपूर तथा अभय दिओल ने मुख्य भूमिका निभाई है।

पिछले वर्षों में कई फिल्म निर्माताओं ने छात्र-राजनीति से प्रभावित होकर अथवा छात्र-राजनीति को पृष्ठभूमि में रखकर फिल्मों का निर्माण किया। 'अनुराग कश्यप' द्वारा निर्देशित फिल्म 'गुलाल' आज भी खालिस छात्र-राजनीति और हंगामेदार गीतों के लिए याद की जाती है। यह फिल्म इस बात को दिखाती है कि किस प्रकार राजनेता अपने लाभ के लिए छात्र-नेताओं का प्रयोग करते हैं।

'प्रकाश झा' द्वारा निर्देशित 'आरक्षण' एक सशक्त फिल्म साबित हुई। यह एक क्रांतिकारी फिल्म है जिसने समाज को झकझोर दिया। फिल्म में शैक्षणिक संस्थाओं में आरक्षण के मुद्दे को अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से उठाया गया है। यह फिल्म अपने विचारोत्तेजक मसले के कारण राष्ट्रीय बहस

का विषय बनी तथा अनेक शहरों में इस फिल्म के प्रदर्शन पर रोक लगा दी गयी।

'मनीष तिवारी' द्वारा निर्देशित फिल्म 'दिल दोस्ती इटीसी' छात्र-राजनीति के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण फिल्म है। इस फिल्म में दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीतिक परिवेश को दर्शाया गया है। यह फिल्म युवाओं की महत्त्वाकांक्षा को दिखाती है। विश्वविद्यालयी चुनावी-राजनीति को छात्र देश के सक्रिय राजनीतिक जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए माध्यम के रूप में इस्तेमाल करते हैं, फिल्म इस तथ्य को बताती है।

'धुलिया' द्वारा निर्देशित 'हासिल' इलाहाबाद विश्वविद्यालय की छात्र-राजनीति को केन्द्र में रखकर बनी एक प्रभावशाली फिल्म है। फिल्म की केन्द्रिय भूमिका 'आशुतोष राना' ने निभायी है। फिल्म में यह स्पष्ट किया गया है कि छात्र-संघ का अध्यक्ष बन जाने के पश्चात् सांसद व विधायक बनने का रास्ता खुल जाता है। फिल्म में इस सत्य को भी दर्शाया गया है कि शक्ति का दुरुपयोग राजनीति में अपराध को बढ़ावा देता है।

'सुधीर मिश्रा' द्वारा निर्देशित 'हजारों ख्वाहिशें ऐसी' छात्र-राजनीति को केन्द्र में रखकर बनाई गई एक संवेदनशील फिल्म है। फिल्म तीन छात्रों के इर्द-गिर्द घूमती है। इसमें तीन चरित्र तीन अलग-अलग विचाराधाराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। सिद्धार्थ (के.के. मेनन), गीता (चित्रांगदा सिंह) तथा विक्रम (शाइनी आहूजा) ने इस फिल्म में जानदार भूमिका निभाई है। फिल्म में पश्चिम बंगाल में उभरे नक्सली आंदोलन का भारतीय राजनीति पर पड़ने वाले प्रभाव को दिखाया गया है।

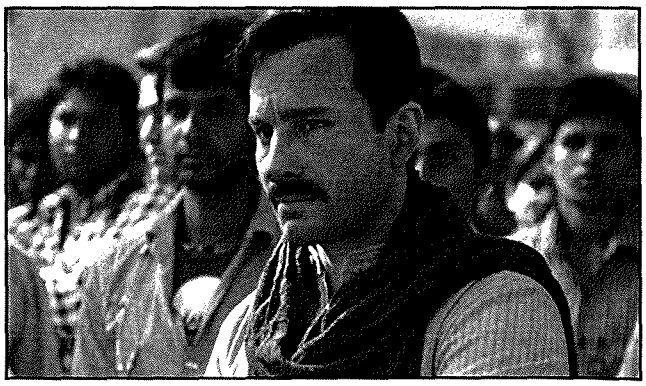

'राकेश ओम प्रकाश मेहरा' द्वारा निर्देशित 'रंग दे बसंती' पिछले दशक में प्रदर्शित उल्लेखनीय फिल्म है। फिल्म विश्वविद्यालय की पृष्ठभूमि पर केन्द्रित है। वर्तमान समय में युवा-छात्र आस-पास फैले चारों तरफ के माहौल से कटकर अपनी ही मौज-मस्ती या उदासी में डूबा हुआ है। उसे अपने देश के इतिहास और राजनीति की भी जानकारी नहीं है। फिल्म के अंतिम चरण में वह अपने चारों तरफ चल रहे षड्यंत्र को समझता है तथा समाज को सचेत करने का प्रयास करता है। इस प्रयत्न में उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है।

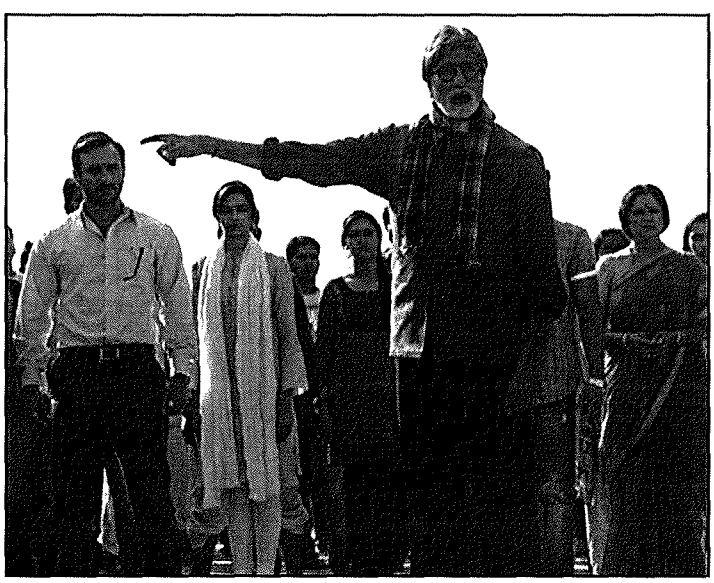

बदलते आर्थिक-सांस्कृतिक वातावरण में युवा-वर्ग की प्राथमिकताएँ धारणाएँ तथा जीवन मूल्य तीव्र गति से बदल रहे हैं। अपने भविष्य के प्रति अनिश्चितता का भय उसके पूरे व्यक्तित्व को बीमार कर रहा है। इस मुश्किल दौर में पुराने जीवन- मूल्यों से उसकी आस्था समाप्त होती जा रही है, साथ ही नए मूल्यों को न पाने की छटपटाहट में वह दिशाहीन हो भटक रहा है। आज के युग का युवा अधिक उन्मुक्त और भौतिकतावादी हो गया है। छात्र अपने भविष्य के प्रति सजग होने के बावजूद कहीं कुछ लापरवाह भी दिखाई दे रहा है। युवाओं की महत्त्वाकांक्षा उन्हें राजनीति की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। कभी वह अपनी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए तो कभी समाज को स्वच्छ व स्वस्थ करने का सपना लेकर देश की सक्रिय राजनीति की ओर उन्मुख होते हैं।

इस तरह की फिल्मों के द्वारा राजनीति को नए दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया जा रहा है। फिल्मकारों का कर्तव्य बनता है कि वे अपनी फिल्मों के माध्यम से यथार्थ राजनैतिक समस्याओं को दर्शकों तक पहुँचाएँ, साथ ही उन समस्याओं का समाधान भी दिखाते चलें। ये फिल्में तभी सार्थक होंगी जब वे और अधिक अच्छे समाज के निर्माण में अपना योगदान देंगी।

(लेखिका एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, श्यामलाल महाविद्यालय 'सांध्य' दिल्ली विश्वविद्यालय में हैं।)